बलिया दर्शन

VOLUME 38

01/APR/2019 TO
30/APR/2019

ई-पत्रिका

इतिहास के झरोखे से :- बलिया

प्राचीन काल से ही वर्तमान बलिया जिला खोसता की राजधानी में सम्मिलित था। उत्तर पूर्वी दिशा में गंगा नदी खोसला की सीमा निर्धारित करती थी और पूरा बलिया जिला उसी में जुड़ा हुआ था।

सूर्यवंशी इस खोसला प्रदेश में रहने वाले सबसे प्राचीनतम/पहला खानदान था। उन्होने बलिया में एक पूर्ण रूप से कार्यकारी सरकार को स्थापित किया। मनु के जेष्ठ पुत्र इच्चवांशु यहां का प्रथम शासक था जिसके वैदिक संस्कृति में ख्याति प्राप्त थी।

16वीं शताब्दी में खोसला 16 महाजनपदों में से एक था। यहां पर महाखोसला का राज्य चलता था। यह जनपद जैन और बुद्ध की शिक्षाओं से अत्यधिक प्रभावित था।

खोसला, मोर्या, सांगा, कुशानन आदि अनेको खानदानों ने यहां पर शासन किया। कुशानन खानदान के अन्त के पश्चात बलिया जनपद गुमनामी अंधेरों में डूब गया। फाहेन के भारत भ्रमण के दौरान यह जनपद बौद्ध धर्म के प्रभाव में आया। 13वीं शताब्दी के आरम्भ में मुसलमान शासक भारत आने लगे।

बलिया जिला स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्रता सैनानियों के विचारों से अनमिग्न नहीं था। 1857 के गदर के दौरान यह जनपद स्वतंत्रता संग्राम की गतिविधियों का मुख्य केन्द्र था। दादा भाई नारांजी, पं. जवाहर लाल नहेरू, एस एन बैनर्जी आदि इस जनपद में आये और यहां के निवासियों को स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने हेतु प्रेरित किया।

सन 1925 में पुरूषोत्तम दास टाउंन, जवाहर लाल नहेरू बलिया आये और मिल्की में गांधी आश्रम के समारोह मे सम्मिलित हुए। इसी दौरान महात्मा गांधी भी बलिया आये। बलिया जनपद ने सिविल डिसओविडियन्स मोवमेंट में भाग लिया। इस जनपद के निवासियों ने जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों से भी नमक सत्याग्रह में भाग लिया।

12 अप्रैल 1930 को नमक आन्दोलन का अन्त हुआ और उत्पादित नमक खुले आम बाजारों में बिकने लगा। तत्पश्चात यही नमक रिओटी, रस्सा और बन्ध में बनाया जाने लगा।

स्वच्छ बलिया स्वस्थ बलिया

श्री दिनेश कुमार विश्वकर्मा
(अधिशाषी अधिकारी)

बलिया संदेश

श्री अजय कुमार (अध्यक्ष)

I am delighted to present the tasks and issue of Ballia Nagar Palika by e Patrika Ballia Sandesh in March 2019. Nagar Palika Parishad Ballia is grateful to the citizens who displayed tremendous enthusi-asm and whole heartedly participated in numerous activities throughout this period. All of us should bear in mind that this is not end but a beginning of the exercise pertaining to development and Swachh Mission program. The coming times will surely be very hectic and eventful. Ballia promises to leave no room for compla-cency and will work even harder to achieve the targets. We solicit active participation from the citizens in our endeavor. We sincerely believe that decisions taken by Nagar Palika Parishad Ballia should benefit Nagar Palika Parishad Ballia and the citizens in the ultimate analysis. Many projects process in work in Nagar Palika Parishad Ballia for development our Nagar Palika and citizens. Thanks to all citizens of Nagar Palika Parishad Ballia for supporting to develop Ballia.

April Fools Day

01/04/2019

पूरी दुनिया के लोग इस दिन को मनाते हैं, जिसका कोई भी उपयुक्त कारण नहीं है. कुछ देशों में इस दिन अवकाश भी होता हैं, जबकि अन्य देशों के लिए यह कैलेंडर की एक सामान्य दिनांक हैं. यह दिन है अप्रैल फूल का दिन. इसे मुर्ख दिवस के नाम से भी जाना जाता हैं. पूरी दुनिया में इस दिन लोगों को किसी का मजाक बनाने की छूट होती हैं. ये प्रेंक्स और मजाक किसी को भी हानि पहुचाने वाले नहीं होते. इस तरह के मजाक का शिकार बनने वाले अप्रैल फूल कहलाते हैं. वे पूरे मामले में चुटकी भर नमक डाल देते हैं, जिससे प्रैंक करने वाले और अन्य लोगों के चेहरे पर मुस्कान आ जाती हैं. व इन प्रसिद्द पंक्तियाँ कहते हैं **"अप्रैल फूल बनाया,तो तुमको गुस्सा आया, इसमें मेरा क्या कसूर, ज़माने का कसूर, जिसने दस्तूर बनाया, अप्रैल फूल बनाया "**. अप्रैल फूल एक वार्षिक उत्सव हैं जिसे 1 अप्रैल को मनाया जाता हैं.

हालांकि इसकी उत्पति के आस पास बहुत सी कहानियां घुमती हैं, लेकिन अभी तक इस बारे में सही जानकारी नहीं हैं कि यह त्यौहार पहली बार कब मनाया गया था,या इसका क्या कारण था. कुछ का कहना हैं कि इसका सम्बंध फ्रेंच कैलेंडर में होने वाले परिवर्तन से हैं,जबकि अन्य का मानना हैं कि इसका इंग्लैंड के राजा रिचर्ड द्वितीय की बोहेमिया के ऐनी से सगाई से सम्बंध हैं. फिर भी कुछ का मत हैं कि इसका सम्बन्ध हिलारिया से है.ये सभी मत दर्शाते हैं कि इस दिन के बारे में कोई ठोस पारम्परिक सबूत नहीं हैं.

प्रकृति के सौन्दर्य को उत्सव के रूप में मनाना- सामान्यत: "बसंत विषुव" को सर्दी की समाप्ति और बसंत ऋतू का आगमन माना जाता है. यह समय रंग-बिरंगे फूलों के खिलने का मौसम था. इस कारण कुछ संस्कृतियों में लोगों ने इसे परिवर्तन के रूप में चिन्हित किया और प्राकृतिक सौन्दर्य का उत्सव मनाने लगे.

(अम्बेडकर जयंती)

14/04/2019

भारत के लोगों के लिये डॉ भीमराव अंबेडकर का जन्म दिवस और उनके योगदान को याद करने के लिये 14 अप्रैल को एक उत्सव से कहीं ज्यादा उत्साह के साथ लोगों के द्वारा अंबेडकर जयंती को मनाया जाता है। उनके स्मरणों को श्रद्धांजलि देने के लिये वर्ष 2015 में ये उनका 124 वाँ जन्मदिवस उत्सव होगा। ये भारत के लोगों के लिये एक बड़ा क्षण था जब वर्ष 1891 में उनका जन्म हुआ था।

इस दिन को पूरे भारत वर्ष में सार्वजनिक अवकाश के रुप में घोषित किया गया। नयी दिल्ली, संसद में उनकी मूर्ति पर हर वर्ष भारत के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री (दूसरे राजनैतिक पार्टियों के नेताओं सहित) द्वारा सदा की तरह एक सम्माननीय श्रद्धांजलि दिया गया। अपने घर में उनकी मूर्ति रखने के द्वारा भारतीय लोग एक भगवान की तरह उनकी पूजा करते हैं। इस दिन उनकी मूर्ति को सामने रख लोग परेड करते हैं, वो लोग ढोल बजाकर नृत्य का भी आनन्द लेते हैं।

बाबा साहब अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल को हुआ था, इसलिए इस दिन को अम्बेडकर जयंती के रुप में मनाया जाता है। ये दिवस सभी भारतीयों के लिए एक शुभ दिन माना जाता हैं। उन्होंने सक्रिय रूप से दलितों के साथ-साथ हमारे समाज के अधिकारहीन वर्ग के लिए भी कार्य किया और उनके अधिकारों के लिए लड़े। वे एक राजनीतिक नेता, कानूनविद, मानवविज्ञानी, शिक्षक, अर्थशास्त्री थे। चूंकि इस दिन का भारतीय इतिहास में बहुत बड़ा महत्व है, इसलिए इसे भारतीय लोगों द्वारा अम्बेडकर जी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए देश भर में धूममधाम और हर्षों-उल्लास के साथ मनाया जाता है।

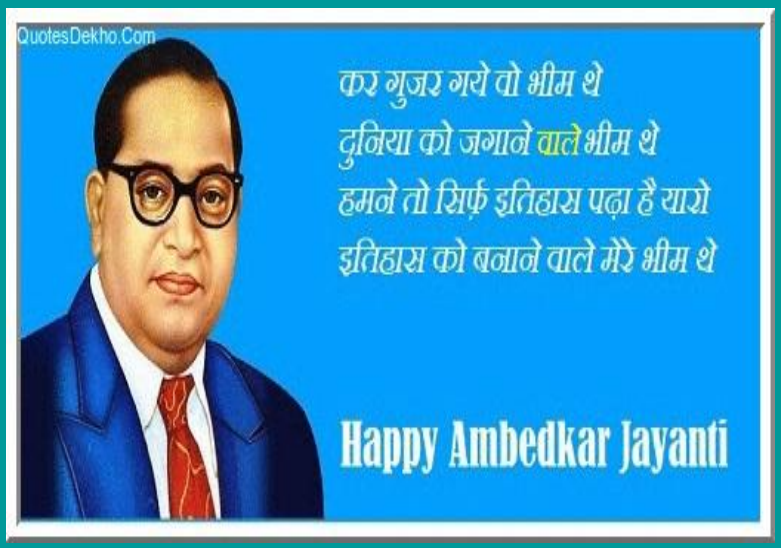

(महावीर जयंती)

17/04/2019

महावीर जयंती हर साल विशेषरुप से जैन धर्म और अन्य धर्मों के लोगों के द्वारा महान संत, महावीर (जिन्हें वर्धमान के नाम से भी जाना जाता है) के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में मनाई जाती है। महावीर स्वामी जैनों के 24वें और अन्तिम तीर्थांकर थे, जिन्होंने जैन धर्म की खोज करने के साथ ही जैन धर्म के प्रमुख सिद्धान्तों को स्थापित किया। इनका जन्म 540 ईसा पूर्व शुक्ल पक्ष के चैत्र माह के 13वें दिन, बिहार के वैशाली जिले के कुंडलग्राम में हुआ था। इसी कारण महावीर जयंती हर साल 13 अप्रैल को बहुत अधिक उत्साह और आनंद के साथ मनाई जाती है। यह जैनियों के लिए बहुत अधिक महत्वपूर्ण और पारंपरिक उत्सव है। इसे पूरे भारत में राजपत्रित अवकाश के रुप में घोषित किया गया है, इस दिन सभी सरकारी कार्यालय और शैक्षणिक संस्थाओं का अवकाश रहता है।

महावीर स्वामी, जैन धर्म के 24वें और आखिरी तीर्थांकार, 540 ईसा. पूर्व, भारत में बिहार के एक राजसी परिवार में जन्में थे। यह माना जाता है कि, उनके जन्म के दौरान सभी लोग खुश और समृद्धि से परिपूर्ण थे, इसी कारण इन्हें वर्धमान अर्थात् विद्धि के नाम से जाना जाता है। ये राजा सिद्धार्थ और रानी त्रिशला के घर पैदा हुए थे। यह माना जाता है कि, उनके जन्म के समय से ही इनकी माता को इनके बारे में अद्भुत सपने आने शुरु हो गए थे कि, ये या तो ये सम्राट बनेगें या फिर तीर्थांकार। उनके जन्म के बाद इन्द्रदेव द्वारा इन्हें स्वर्ग के दूध से तीर्थांकार के रुप में अनुष्ठान पूर्वक स्नान कराया गया था।

उन्होंने 30 वर्ष की आयु में धार्मिक जागरुकता की खोज में घर त्याग दिया था और 12 वर्ष व 6 महीने के गहरे ध्यान के माध्यम से इन्हें कैवल्य अर्थात् ज्ञान प्राप्त करने में सफलता प्राप्त हुई थी। इन्होंने पूरे भारत वर्ष में यात्रा करना शुरु कर दिया और लोगों को सत्य, असत्ये, अहिंसा, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह की शिक्षा देते हुए 30 वर्षों तक लगातार यात्रा की। 72 वर्ष की आयु में इन्होंने निर्वाण को प्राप्त किया और जैन धर्म के महान तीर्थांकारों में से एक बन गए, जिसके कारण इन्हें जैन धर्म का संस्थापक माना जाता है।

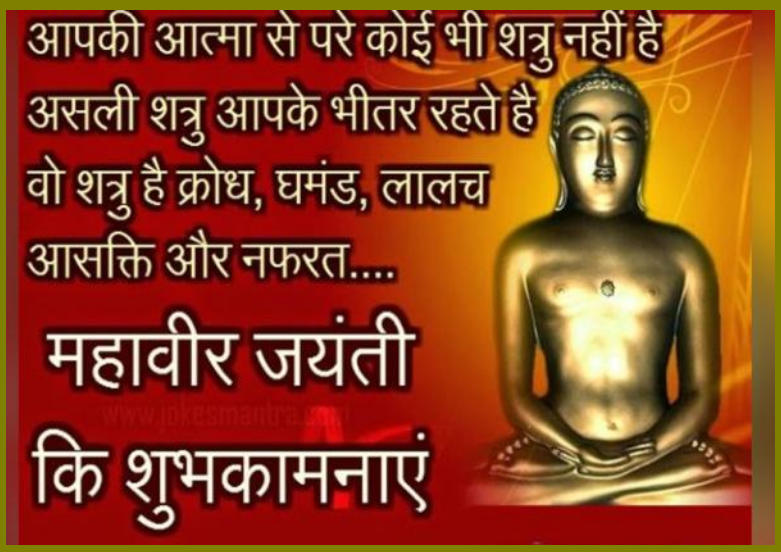

(गुड फ्राइडे)

19/04/2019

ईसाई धर्मानुसार ईसा मसीह परमेश्वर के पुत्र थे। ईसा मसीह को यीशु के नाम से भी पुकारा जाता है। "गुड फ्राइडे"(Good Friday) के दिन ही उन्हें क्रॉस पर लटकाया गया था। इस दिन जीवनभर लोगों में प्रेम और विश्वास जगाने वाले प्रभु यीशु को याद किया जाता है और उनके उपदेशों को सुनाया जाता है। गुड फ्राइडे के दिन श्रद्धालु प्रेम, सत्य और विश्वास की डगर पर चलने का प्रण लेते हैं। कई जगह लोग इस दिन काले कपड़े पहनकर शोक व्यक्त करते हैं। साल 2019 में गुड फ्राइडे 19 अप्रैल को मनाया जाएगा। गुड फ्राइडे के दिन ईसा मसीह को क्रॉस पर लटकाया गया था। उनपर आरोप लगाए गए थे कि वह पाखंड कर रहे हैं और खुद को ईश्वर का पुत्र बता रहे हैं। गुड फ्राइडे एक शौक दिवस होता है लेकिन क्योंकि इस दिन ईसा मसीह की मृत्यु हुई थी इस कारण इसे "गुड" फ्राइडे कहकर संबोधित किया जाता है।

(ईस्टर दिवस)

21/04/2019

ईस्टर का पर्व, यूनानी (ईसाई) पूजन-वर्ष का सबसे महत्वपूर्ण और धर्मिक पर्व व उत्सव है. ईसाई धर्म के अनुसार, जब यीशु को सूली पर लटकाया गया था तो उसके तीसरे दिन वह पुनर्जीवित हो गये थे. तभी से इस मृतोत्थान को ईसाई ईस्टर दिवस और ईस्टर,सन्डे के नाम से मनातें है. कुछ लोग इस त्यौहार को मृतोत्थान दिवस और मृतोत्थान रविवार भी कहते हैं.
यह फेस्टिवल गुड फ्राइडे के 2 दिन बाद और पुन्य बृहस्पतिवार या मौण्डी थर्सडे के 3 तीन बाद ईस्टर मनाया जाता है. यीशु की मृत्यु 26 और 36 ई.प. के बीच में हुई थी. इनकी मृत्यु और उनके जी उठने के कालक्रम को अनेकों और भिन्न-भिन्न प्रकार से बताया जाता है. ईस्टर का जो काल होता है वो परंपरागत चालीस दिनों का होता है. ये पर्व ईस्टर दिवस से होकर स्वर्गारोहण दिवस तक होता आया है. परन्तु अब यह फेस्टिवल आधिकारिक तौर पर पंचाशती तक पचास (50) दिनों का होता है.

ईस्टर सीज़न और ईस्टर काल का जो पहला सप्ताह होता है उसको ईस्टर सप्ताह या ईस्टर अष्टक या ओक्टेव ऑफ़ ईस्टर भी कहते हैं. ईस्टर के पर्व को चालीस सप्ताहों के काल और एक चालिसे के अंत के रूप में भी देखा जाता है, इस पवित्र काल को प्रायश्चित, प्रार्थना और उपवास करने के लिए भी माना जाता है. ईस्टर का त्योहार एक बहुत ही प्रमुख त्यौहार है, ये एक गतिशील त्यौहार है, जिसका अर्थ है कि ये नागरिक कैलेंडर के अनुसार नही चलता हैं.

वाराणसी में रविवार को शतरंज चैंपियनशिप में विजेता खिलाड़ी।

बलिया की रिया ओवरऑल चैंपियन

अमर उजाला ब्यूरो

शतरंज चैंपियनशिप-2019 में वाराणसी की शांभवी, ऐशानी को मिला दूसरा स्थान

वाराणसी। श्याम नारायण पांडेय स्मृति उत्तर प्रदेश अंडर 17 (बालक व बालिका) फि डे रेटिंग शतरंज चैंपियनशिप-2019 के तीसरे दिन रविवार को छह चक्रों की बाजी खेली गई। अपने सभी मैच जीतकर बालिकाओं के वर्ग में बलिया की रिया मिश्रा चैंपियन हुई। टॉप बोर्ड पर उन्होंने बनारस की नियति विक्रम सिंह को मात दी। वहीं, दूसरे बोर्ड पर वाराणसी की शांभवी श्रीवास्तव ने वाराणसी की श्रुति त्रिपाठी को मात देकर पांच अंकों के साथ दूसरा स्थान प्राप्त किया। बनारस की ऐशानी पाठक व कानपुर की तान्या वर्मा 4.5 अंकों के साथ क्रमशः तीसरे व चौथे स्थान पर रहीं। सोनभद्र की स्नेहा यादव, वाराणसी की नियति विक्रम सिंह, कानपुर की प्रतीक्षा वर्मा, वाराणसी की नैना श्रीवास्तव व श्रुति त्रिपाठी तथा कानपुर की साक्षी वर्मा संयुक्त रूप से चार अंकों के साथ क्रमशः पांचवें से दसवें स्थान पर रहीं। शीर्ष दो चयनित खिलाड़ी 29 जून से केरला के कोच्चि में आयोजित आल इंडिया अंडर 17 शतरंज चैंपियनशिप में उत्तर प्रदेश शतरंज टीम की ओर से भाग लेंगे।

ओपन वर्ग में कुल सात चक्रों की बाजी खेली गई। लखनऊ के तनिष्क गुप्ता छह अंकों के साथ चैंपियन घोषित किए गए। मैनपुरी के नारायण चौहान, वाराणसी के ऋषि सिंह तथा उदित गुप्ता भी छह अंकों के साथ क्रमशः दूसरे से चौथे स्थान पर रहे। सोनभद्र के संकल्प त्रिपाठी, आगरा के आदित्य प्रताप सिंह, बलिया के सुमित मिश्रा तथा वाराणसी के कुणाल किशोर 5.5 अंकों के साथ क्रमशः पांचवें से आठवें स्थान पर रहे। गाजियाबाद के माणिक्य नेगी, लखनऊ के जिंदल आभास, वाराणसी के शिवेश सिंह, विवेक शुक्ला, आयुष पटेल, शाश्वत दुबे तथा कबीर आनंद पांच अंकों के साथ क्रमशः नवें से 15वें स्थान पर रहे। खिलाड़ियों को मुख्य अतिथि पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष डॉ. सुजीत सिंह ने पुरस्कृत किया। अध्यक्षता अमित पांडे व संचालन दिलीप कुमार पांडेय ने किया।

E NEWSLETTER 9

E NEWSLETTER 10

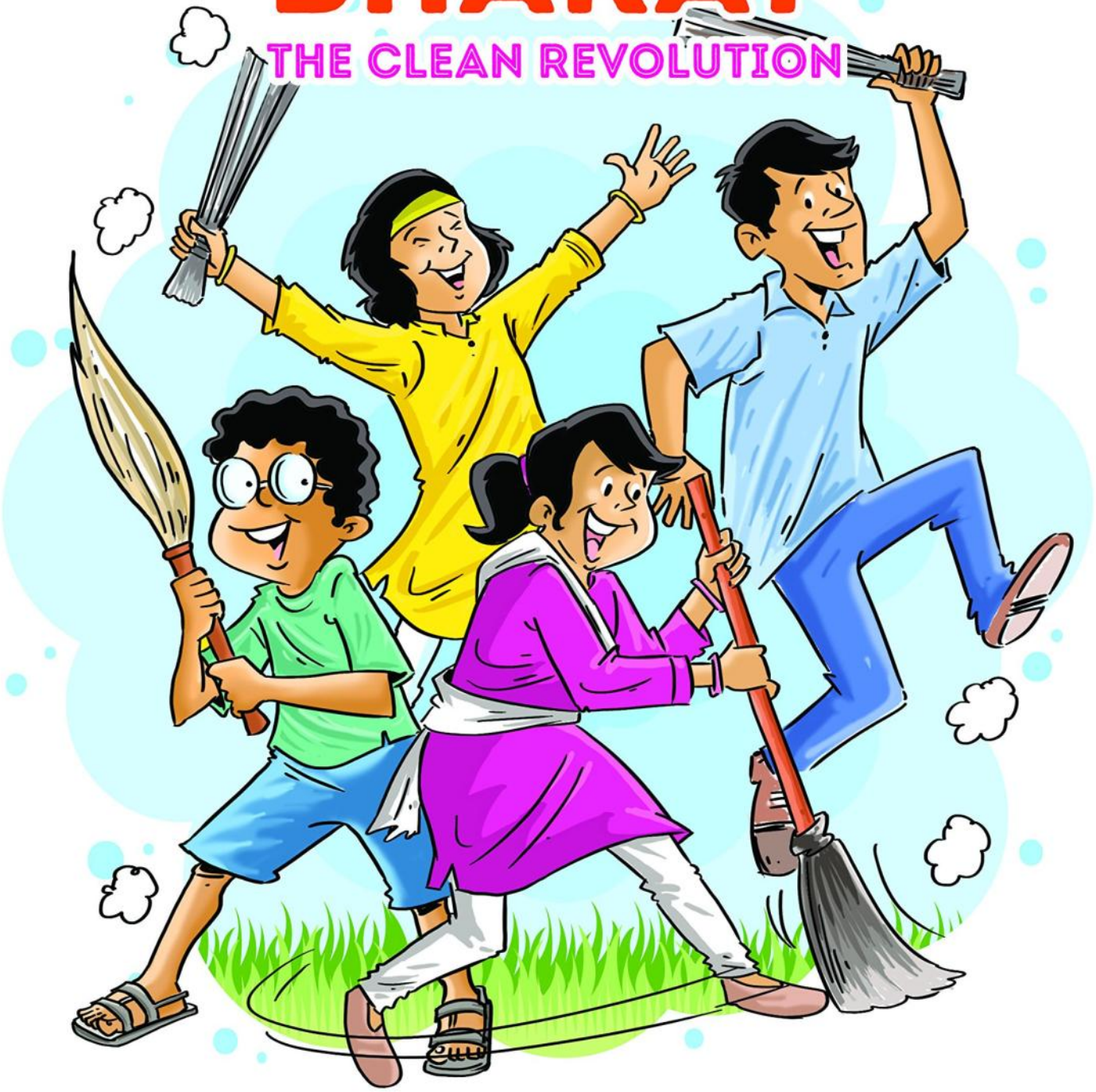

नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं

मां शैलपुत्री

रोग-शोक का विनाश करतीं मां शैलपुत्री

भगवती के पहले स्वरूप को शास्त्रों में शैलपुत्री कहा गया है। शैलपुत्री माता सती (पार्वती) का ही रूप हैं। माता सती के पिता, प्रजापति दक्ष ने एक विशाल यज्ञ करवाया और उसमें सभी देवी-देवताओं को बुलाया, लेकिन भगवान शंकर और माता सती को निमंत्रण नहीं भेजा। माता सती को जब यह पता चला, तो वे भगवान शंकर के पास पहुंचीं और यज्ञ में जाने की इच्छा जाहिर की। भगवान शंकर ने कहा कि बिना निमंत्रण के यज्ञ में जाना श्रेयकर नहीं होगा, लेकिन माता सती की इच्छा के कारण भगवान शंकर ने उन्हें यज्ञ में जाने की अनुमति दे दी। माता सती जब अपने पिता राजा दक्ष के यहां पहुंचीं, तो वहां परिजनों ने उनका उपहास उड़ाया और किसी ने ठीक से उनसे बात तक नहीं की। परिजनों के इस व्यवहार से उनके मन को बहुत कष्ट पहुंचा। उन्होंने देखा कि वहां भगवान शंकर के प्रति तिरस्कार का भाव भरा हुआ है। दक्ष ने भगवान शंकर के प्रति कुछ अपमानजनक वचन भी कहे। यह सब देखकर उनका हृदय क्षोभ, ग्लानि और क्रोध से संतप्त हो उठा। उन्होंने सोचा, भगवान शंकर की बात न मान, यहां आकर बहुत बड़ी गलती की है। माता सती अपने पति के इस अपमान को सह न सकीं। उन्होंने अपने उस रूप को तत्क्षण वहीं योगाग्नि द्वारा जलाकर भस्म कर दिया। वज्रपात के समान इस दारुण-दुःखद घटना को सुनकर शंकरजी ने क्रोधित होकर अपने गणों को भेजकर दक्ष के यज्ञ का पूर्णतः विध्वंस करवा दिया। सती ने योगाग्नि द्वारा अपने शरीर को भस्मकर अगले जन्म में शैलराज हिमालय की पुत्री के रूप में जन्म लिया। इस बार वे 'शैलपुत्री' नाम से विख्यात हुईं। हेमवती भी उनका ही नाम है। मां शैलपुत्री की आराधना से भक्तों को चेतना का सर्वोच्च शिखर प्राप्त होता है, जिससे शरीर में स्थित 'कुंडलिनी शक्ति' जागृत होकर रोग-शोक रूपी दैत्यों का विनाश करती है। दुर्गा के पहले स्वरूप में शैलपुत्री मानव के मन पर आधिपत्य रखती हैं। जीवन में प्रत्येक क्षेत्र में सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने की शक्ति पर्वत कुमारी मां शैलपुत्री ही प्रदान करती हैं। इनके एक हाथ में त्रिशूल तथा दूसरे में कमल का फूल रहता है। इनका वाहन बैल है। 'योग पुस्तकों' में इनका स्थान प्रत्येक प्राणी में 'नाभि चक्र' से नीचे स्थित 'मूलाधार चक्र' को बताया गया है। यही वह स्थान है, जहां आद्य शक्ति 'कुंडलिनी' के रूप में रहती है। इसलिए नवरात्र के प्रथम दिन देवी की उपासना में योगी अपने मन को 'मूलाधार' चक्र में स्थिर करते हैं। पूर्वजन्म की भांति इस जन्म में भी वह शिवजी की ही अर्धांगिनी बनीं। नवदुर्गाओं में प्रथम शैलपुत्री दुर्गा का महत्व और शक्तियां अनंत हैं।

स्वच्छ भारत

एक कदम स्वच्छता की ओर

स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत खुले मे शौच से मुक्ति के सम्बन्ध में जागरूकता हेतु एक मार्मिक अपील

जागो युवा जागो स्वच्छ भारत है तुम्हारा अधिकार लेकिन पहले उठाओं पहले कर्तव्य का भार

****

जब होगी हर डगर, हर गली साफ |
तो ही पूरी होगी स्वच्छ भारत की आस ||

****

हर गाँव हर शहर होगा जब साफ |
तभी हो पाएगा देश का सही विकास ||

****

स्वच्छ भारत अभियान है एक आस |
ताकि हो भारत देश का सम्पूर्ण विकास ||

****

स्वच्छता ही है एक मात्र उपाए |
जो सभी को हमेशा स्वस्थ्य बनाए ||

****

स्वच्छता है महा अभियान |
स्वछता मे दीजिए अपना योगदान ||

****

हाथ से हाथ मिलाना है
गंदगी नहीं फैलाना है
स्वच्छता को अपनाना है

****

स्वच्छ भारत मिशन बलिया

श्री दिनेश कुमार विश्वकर्मा
(अधिशाषी अधिकारी)

श्री अजय कुमार
(अध्यक्ष)

बलिया दर्शन

Contact Us

: www.fageosystems.in

: info@fageosystems.in

Tel/Fax : 01204349756